१ ओअंकार (੧ੳ) सति गुर प्रसादि

इच्छा मालिक की !

(गुरवाणि अनुसार मृत्यु क्या है?)

जैसे किरसाणु बोवै किरसानी ॥
काची पाकी बाढि परानी ॥
जो जनमै सो जानहु मूआ ॥
गोविंद भगतु असथिरु है थीआ ॥

(श्री गुरु अर्जुन देव जी)

मूल रूप में

'गुरबाणी इसु जग महि चानणु' द्वारा प्रकाशित पुस्तक

लेखक एवं संपादक : स. सरदारा सिंघ

क्रांतिकारी जगत् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

जसबीर सिंघ Ph. : (0172-2696891), 09988160484

Type Setting : Radheshyam Choudhary
Mob. : 098149- 66882

Download Free जसबीर सिंघ

दो शब्द

रतना रतन पदार्थ बहु सागरु भरिआ राम ।।

बाणी गुरबाणी लागे कितर्न हथि चड़िआ राम ।।

गुरबाणी लागे तिन हथि चड़िआ निरमोलकु रतनु अपारा ।।

हरि हरि नामु अतोलकु पाइआ तेरी भगति भरे भंडारा ।।

समुंदु विरोलि सरीरु हम देखिआ इक वसतु अनूप दिखाई ।।

गुर गोविंदु गेविंदु गुरू है नानक भेदु न भाई ।।

(अंग - 442)

श्री गुरू ग्रन्थ साहब जी की बाणी एक बहुत बड़े समुन्द्र की न्यायी हैं। इस में बेअंत रत्न पदार्थ भरे पड़े हैं। वे पदार्थ हमारे जीवन में काम आने वाले हैं। जीवन के हर पहलू की बाबत गुरू ग्रन्थ साहब में जानकारी और अगवाई मिलती हैं, परन्तु इस की प्राप्ति श्री गुरू ग्रंथ साहब के दर्शन भाव वाणी का अध्यान करने से होती हैं। गुरबाणी के पाठ को विचार करने से हमें अति अमुल्य भंडारे मिलते हैं, सब से ज्यादा कीमती वस्तु प्रभु का नाम है जो सब निधानों का निधान हैं।

मनुष्य जीवन क्या हैं। कैसे मिलता हैं। इसका तात्पर्य क्या है और जीवन का मनोर्थ क्या हैं। उस मर्नोथ को कैसे प्राप्त करना है ?इन प्रश्नों के उत्तर हमें गुरबाणी में मिलते हैं।

एक बहुत बड़ा प्रश्न है कि मौत क्या है ?इस प्रश्न के उत्तर में गुरू साहबान और भक्तों ने काफी विस्तार पूर्वक लिखा है। जन्म मरन के भेद और मौत के संकल्प को अच्छी तरह प्रगटाया गया है।

किसे सगे - संबन्धी, रिश्तेदार, मित्र दोस्त की मौत सुन कर, देख कर, हमें दुख होता हैं। यह दुख असह होता हैं। ऐसे समय पर अपने आप को सम्भालना और दुख से छुटकारा पाने का एक ही तरीका है कि बाणी का पाठ किया जाये और इस में मौत के संकल्प की अच्छी तरह समझा जाये तो हमें शान्ति मिल सकती है।

प्रस्तुत पुस्तिका में मौत के रहस्य को गुरबाणी के आधार पर गुरु कृप्या द्वारा सुलझाने की कोशिश की गई है। आशा है पाठक जन इस को पढ़ कर शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

भूल - चुक की क्षमा मांगते हुये विनिति है कि अगर कोई सुझाव हो, तो दास को लिखने की कृपा करना जी।

हरि हरि नामु अतोलकु पाइआ तेरी भगति भरे भंडारा ।।

पंजाबी प्रादेशिक भाषा होने के कारण, संस्था द्वारा प्रकाशित साहित्य को पढ़ने वाले पाठकों में बहुगिनती पंजाबी जानने वाले पाठकों की है। संस्था चाहती है कि गुरूओं का संदेश व उपदेश, पंजाबी जानने वाले पाठकों तक ही सीमित ना रहे। 'गुरू शब्द' का प्रचार अधिक से अधिक हो, इस लिए गुरबाणी में दर्शाए गए संकल्प 'मृत्यु क्या है' पुस्तिका **'इच्छा मालक की'** द्वारा हिन्दी पाठकों तक पहुँचाया जा रहा है। इस लेख के हिन्दी अनुवाद की प्रति, पुस्तिका के रूप में आपके हाथों में है।

हिन्दी अनुवाद की सरदार बचित्तर सिंघ जी होशियारपुर वालो ने किया है। दास उनका अति धन्यवादी है।

'गुरू शब्द लंगर' के अन्तर्गत, संस्था द्वारा साहित्य प्रयाप्त मात्रा में प्रकाशित हो चुका है। जिस की सूची, प्रति माह छपने वाली पत्रिका 'गुरबाणी चानणु' में देते रहते है। स्वयं पढ़ें दूसरों को प्रेरित करें और लाभ उठाएं।

लेखक एवं संपादक : स. सरदारा सिंघ

मरज़ी मालिक की (प्रभु इच्छा)

मालिक कौन? किस मालिक की बात करने जा रहे हैं घर के मालिक के पास सभी अधिकार होते हैं। साथ साथ घर चलाने का सारा दायित्व भी उसी का होता है। हम जिस मालिक की बात करने जा रहे हैं वह दृष्ट एवं अदृष्य संसार के मालिक हैं। समस्त ब्रह्माण्ड के रचियता जीवों के पालनहार हैं। क्षण में प्रलय और क्षण मात्र में प्रसार करने वाले है। संसार इतना विशाल है कि इसमें वस्तुओं की गिनती, एक या दो नहीं, असंख्या हैं। विडंबना यह है कि हर वस्तु की गिनती, एक या दो नहीं, असंख्य हैं। विडंबना यह है कि हर वस्तु दूसरे से भिन्न है। एक ही प्रकार के गुण रखने वाली अनेक वस्तुएं रंग रूप में एक सी दिखने पर भी भिन्न भिन्न हैं। एक स्त्री दूसरी स्त्री जैसी नही है एक बच्चा दूसरे बच्चे के साथ नहीं मिलता मनुष्य अक्ल व शक्ल में एक सा नहीं है। वनस्पति को देखें, अनगिनत बृक्ष और पौधे हैं। देखने में एक पेड़ के पत्ते एक जैसे लगते हैं गहराई से देखने पर पाओगे कि हर पत्ता आकर या बनावट व रूप रेखा में भिन्न है। **''रंगी रंगी भाति करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ।। करि करि वेखै कीता अपणा जिव तिस दी वडिआई ।।''** सभी आकार ब्रह्माण्ड के मालिक की इच्छाअनुसार बने हैं। आश्चर्य ही आर्श्चय है, प्रभु की रचना देख कर 'वाह वाह' करना बनता है।

हुक्म : ब्रह्माण्ड का रचियता होने के नाते प्रभु, वाहिगुरू इसे अपनी रज़ा इच्छानुसार भाणे में चला रहा है। उसकी आशा व इच्छा के प्रतिकूल कुछ भी नहीं है। गुरू नानक देव जी जपुजी साहिब बाणी में फरमाते हैं कि **'उसके'** हुक्म से आकार बनते हैं, जीव पैदा होते हैं। जीव द्वारा भले बुरे, उत्तम - नीच कर्म भी उसकी रज़ा व हुक्म में अनुबंधित हैं। निष्कर्श यह कि सब कुछ उसकी इच्छानुसार हो रहा है : -

हुकमै अंदरु सभु को बाहरि हुकम न कोइ ।।

नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ।। (अंग - 01)

एक या दो नहीं, समस्त संसार उसकी रज़ा में चल रहा है। यदि हम इस सिद्धांत को समझ लें तो हमारी 'मैं' व ''मेरी' समाप्त हो जाती है। हुक्म का अनुसरण कैसे होता है संसार का खेल क्या है यह केवल हुक्म चलाने वाला प्रभु स्वयं ही जानता है संसार का खेल क्या है यह केवल हुक्म चलाने वाला प्रभु स्वयं ही जानता है। हम तो अटकल पच्चू अनुमान लगाते हैं।

तुझ ते बाहरि कछू न होइ ।।

तु करि करि देखहि जाणै सोइ ।।

किआ कहिऐ कछु कही न जाइ ।।

जो कछु अहै सभ तेरी रजाइ ।। (अंग - 1125)

मनुष्य जन्म लेता है, जीवन में व्यवहारिक कार्य करता है। कहता है मैं यह हूँ, मैं वो हूँ। परन्तु वास्तविकता यह है कि मनुष्य के नियंत्रण में कुछ भी नहीं है। प्रभु, स्वयं सब कुछ करवाता है। काल चक्र उसके हुक्म में चलता है और उसके हुक्मानुसार मनुष्य उसी में समा जाता है। जो प्रभु की इच्छा होती है वही घटता है: -

हुकमी सभे उपजहि हुकमी कार कमाहि ।।

हुकमी कालै वसि है हुकमी साच समाहि ।।

नानक जो तिसु भावै सो थीऐ इन जंता वसि नाहि ।। (अंग - 55)

मनुष्य पैदा होता है, मरता है। गुरबाणी के अनुसार जीव चौरासी लाख योनियों में फंसा रहता है। दूसरा सिद्धान्त और भी

स्पष्ट करता है कि कुछ भी मरता नही है ना ही कोई पैदा होता है। यह तो आने जाने का खेल है जो प्रभु, मालिक स्वयं खेल रहा है। जीव का आवागमन, दृष्टमान और अदृष्ट संसार, सब उसकी आज्ञा, रज़ा में है। गुरु अर्जुन देव जी फरमाते है: -

नह किछु जनमै नह किछु मरै ।।

आपन चलित आप ही करै ।।

आवनु जावनु दृष्ट अनदृष्ट ।।

आज्ञाकारी धारी सभ सृस्टि ।। (अंग - 281)

दृष्टि भाव दृष्यमान जो हमें दिखाई देता है, अदृष्टि भाव अदृष्य जो आंखों से ओझल है। प्रभु जो है, सभी जीवों का पालनहार है। मारना और जीवन देना उसके स्वयं के नियंत्रण में है। यदि उसका हुक्म मारना है तो कोई भी संसारिक उपाय उसे बचा नहीं सकता और यदि जीवित रखना है कोई भी शक्ति उसे मार नही सकती। यह विश्वसनीय सत्य है। सुखमनी बाणी साक्षी है: -

मारै न राखै अवर न कोइ ।।

सरब जीआ का दाता सोइ ।। (अंग - 286)

जीवित प्राणी को प्रभु, मालिक यहां जाहे, वहीं रखेगा। मृत्यु के पश्चात, जहां प्राणी को भेजना है, उसे वहां जाना ही पड़ेगा। इस सम्बंध में हमारे अंदर अनेक प्रकार के भ्रम, संदेह हैं। जिन का समाधान, निष्ठा से गुरु की शिक्षा व उपदेश सुन कर मिल जाता है। अति निष्ठावान प्राणी हर क्षण प्रमात्मा को कण कण में विद्यमान पाता है। ऐसा अनुभव होने से वह मालिक के हुक्म की पालन करता है। शिकायत नहीं करता, तड़पता नहीं, प्रभु इच्छा में संतुष्ट रहता है। गुरु अर्जन देव जी का फरमान है : -

जिऊ जिऊ तेरा हुकम तिवै तिउ होवणा ।।

जह जह रखहि आपि तह जाइ खलोवणा ।।

नाम तेरै के रंगि दुरमति धोवणा ।।

जपि जपि तुधु निरंकार भरमु भउ जोवणा ।।

जो तेरे रंगि रते से जोनि न जोवणा ।।

अंतरि बाहरि इकु नैण अलोवणा ।।

जिनि पछाता हुकमु तिन कदे न रोवणा ।।

नाऊ नानक बखसीस मन माहि परोवणा ।। (अंग - 528)

इस संसार का रचियता धन्य है, जिस ने सृष्टी की उपज करके हर प्राणी का काम धंधे में लगा रखा है। जब मनुष्य को प्रदान की गई आयु की अवधि समाप्त हो जाती है तो उसे वर्तमान परिस्थितियों से कहीं और ले जाया जाता है। श्वासों की अवधि समाप्त होने पर जैसे ही काल का निमन्त्रण आया तो, भाई बहन सगे सम्बंधी वैराग्य में रोते हैं। दुखी होते हैं, परन्तु वह यह नहीं समझते कि जितना उसका सम्बंध, प्यार, आपके साथ बिताने का समय था, व्यतीत हो चुका है। प्रभु, सृजनहार है, उसने समस्त जगत को उधेड़ बुन में लगा रखा है। यह उसकी इच्छा पर निर्भर करता है कि किस प्राणी को कितने समय के लिए किस मण्डल में रखना है। गुरु वाक है : -

धंनु सिरंदा सचा पातसाहु जिनि जगु धंधै लाइआ ।।

मुहलति पुनी पाई भरी जानिअड़ा घति चलाइआ ।।

जानी घति चलाइआ लिखिआ आइआ रूने वीर सबाए ।।

कांइआ हंस थीआ वेछोड़ा जन्म दिन पुंने मेरी माए ।।

जेहा लिखिआ तेहा पाइआ जेहा पूरब कमाइआ ।।

थंनु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइआ ।।

यह किसी के नियंत्रण में नही कि किसी को इस संसार में आने से रोके और यह भी किसी के वश में नही यदि अर्पित शरीर को, आत्मा छोड़ कर जा रही है, तो उसे जाने ना दे। जो कुछ उसने करना है, वही होना है। वह प्रमात्मा तो 'वाह' है, उसकी रचना भी 'वाह वाह' है। जो उसकी इच्छा, रज़ा है वही होना है। जाने वाले को कोई वैद्य, हकीम, या डाक्टर रोक सके असंभव है। संसार का खेल कुएं के रैहट जैसा है, (पुरातन सिंचाई का एक साधन) शृंखला में बंधे बरतन बारी बारी से कुएं में जाते हैं, पानी भरते हैं, कुएं के बाहर आकर खाली हो जाते हैं। यह चक्र चलता रहता है, एक बरतन भरता है, एक खाली होता है, फिर दूसरा, फिर तीसरा। इसी प्रकार संसार, आवागमन का खेल बना हुआ है। प्रभाती राग में गुरु नानक देव जी का फरमान है : –

आवत किनै न राखिआ जावत किऊ राखिआ जाइ ।।

जिस ते होआ सोई परू जाणै जां उस ही माहि समाइ ।।

तूहे है वाहु तेरी रजाइ ।।

जो किछु करहि सोई परू होइबा ।।

अवर न करणा जाइ ।। 1 ।। रहाउ ।।

जैसे हरहट की माला टिंड लगत है

इक सखनी होर फेर भरिअत है ।।

तैसे ही इहु खेलु खसम का जिउ उस की वडिआई ।। (अंग – 1329)

यथा

सभो सूतक भरमु है दूजै लगै जाइ ।।

जंमणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइ ।। (अंग – 472)

मृत मंडल : यह संसार जिस में हमारा निवास है, इसे मृत मण्डल कहते हैं। भाव मौत का घर, आशय यह कि जो भी इस संसार में आता है, उसे मृत्यु अवश्य आती है। यह संसार बालू का घर या कागज़ की भांति है। यदि पानी की बूंद कागज़ के सम्पर्क में आ जाए तो कागज़ फट जाएगा, नष्ट हो जाएगा। इसी प्रकार मालिक की मर्जी से, बड़े बड़े सिद्ध, जती, योगी और गृहस्थियों का घर बार छोड़ कर परलोक जाना पड़ता है। यह संसार स्वपन की भांति है। हम देखते हैं कि हमारे पूर्वज चले गए, बहन भाई चले गए, कई सगे सम्बधी इस संसार को छोड़ कर कूच कर गए। अपनी अपनी बारी से कई चले गए, कई जाने को तैयार हैं। चेतनता इसी में है, गुरु की शरण लें, गुरु दीक्षा लें। वाहिगुरु की बंदगी करें, सदगुरु जी की शरण में आने से, प्रभु हमारी लाज लें। वाहिगुरु की बंदगी करें, सद्गुरु जी की शरण में आने से, प्रभु हमारी लाज रखेंगे, हमें आत्मिक ज्ञान प्रदान करेंगे, प्रभु इच्छा मानने का बल मिलेगा। हमारा जन्म – मरण का दुख दूर होगा। गुरु अर्जुन देव जी का फरमान है: –

मृत मंडल जगु साजिआ जिउ बालू घर बार ।।

बिनसत बार न लगई जिउ कागज बूंदार ।। 1 ।।

सुनि मनसा मेरी मनै माहि सति देखु बीचारि ।।

सिध साधिक गिरही जोगी तजि गए घर बार ।। रहाउ ।।

जैसा सुपना रैनि का तैसा संसार ।।

दृष्टमान सभु बिनसीऐ किआ लगै गवार ।।

कहा सु भाई मीत है देखु नैन पसार ।।

इकि चाले इकि चालसहि सभि अपनी वार ।।

जिन पूरा सतिगुरु सेविआ से असथिर हरि दुआर ।।

जनु नानक हरि का दासु है राखु पैज मुरारि ।। (अंग - 808)

जो प्राणी अपने मालिक, उस एक वाहिगुरु को पहचान कर, सुखदाता प्रभु को समर्ण करते हैं, उन के मन से मौत का भय, यमों आदि का डर दूर हो जाता है, क्योंकि प्रभु निर्भय है, डर से रहित है और वह अपने भक्त को भी भययुक्त कर देता है। निर्भय बना देता है। उस प्रभु के हुक्म के अतिरिक्त किसी का हुक्म नही चलता। मारता और जीवालता वह स्वयं ही है: -

जिनि सेविआ निरभउ सुखदाता ।।

तिनि भउ दूरि कीआ एकु पराता ।।

जो तू करहि सोई फुनि होइ ।।

मारै न राखै दूजा कोइ ।। 2 ।। (अंग - 1139)

मौत तो उसी दिन प्राणी के माथे पर लिख दी जाती है, जिस दिन प्राणी इस संसार में जन्म लेता है। जैसे व्याह का दिन पूर्व निर्धारित होता है, उसी प्रकार मृत्यु का दिन भी प्रभु द्वारा नीयत है। 'साहा' यानि स्वासों की अवधि संपूर्ण होने का दिन नीयत है : -

घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ।।

सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ।। (अंग - 12)

जिस प्रकार मनुष्य जीवन संगिनी से व्याह रचाता है, उसी प्रकार मौत का फरिश्ता, दूल्हा, जिंद यानि आत्मा को व्याह कर ले जाता है। शेख फरीद के वचन हैं : -

जित दिहाड़े धन वरी साहे लए लिखाइ ।।

मलकु जि कंनी सुणीदा मुहु देखाले आइ ।।

जिंद निमाणी कढीऐ हडा कू कड़काइ ।।

साहे लिखे न चलनी जिंदु कूं समझाइ ।।

जिंदु वहुटी मरणु वरु लै जासी परणाइ ।। (अंग - 1377)

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी, अपनी वाणी में जगत रचना के सम्बंध में स्पष्ट करते हुए, वास्तविकता प्रकट करते हैं। यह निराश वादी कथन नहीं, सत्य है, वास्तविकता है। जीवन के प्रति इन वचनों से सीख लेने और जीवन के रहस्य जानने का प्रयास करने की आवश्यकता है। आपका फरमान है : -

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ।।

कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीत ।। (अंग - 1429)

कहते हैं, ऐ मित्रजनों, सत संगियों यह बात अच्छी तरह जान लो, जग रचना एक बालू की दीवार जैसी है, कतई स्थिर नहीं है, टिक नही सकती। किसी भी क्षण तहस नहस होने वाली है। आगे चलकर लिखते हैं कि प्राणी का जीवन स्वपन मात्र है: -

जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ।।

इक मैं कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ।। (अंग - 1427)

जीवन एक स्वपन है, नाटक (पेखना) है। स्वपन और नाटक कभी सत्य नही होते, क्षण मात्र का खेल, तमाशा होता है। पानी के बुलबुले का उदाहरण देते हुए समझाते हैं : -

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ।।

जग रचना तैसे रची कहु नानक सुन मीत ।। (अंग - 1427)

पानी के बुलबुले की आयु कितनी है?बस बनता है, मिटता है। कभी देखो पानी को, जब ऊँचाई से पानी में गिरता है। हजारों, लाखों बुलबुले बनते है और साथ साथ मिट जाते हैं। ऐसा ही संसार का आस्तित्व है। गुरु तेग बहादुर साहिब जी अब बादल की छाया का उदाहरण लेते हुए फरमाते हैं: -

पवनै महि पवन समाइआ ।।

जोति महि जोति रलि जाइआ ।। माटी माटी होई एक ।।

रोवनहारे की कवन टेक ।। कउन मुआ रे कउन मुआ ।।

ब्रहम गिआनी मिलि करहु बीचारा इहु तउ चलतु भइआ ।। (अंग - 885)

अंत के समय शरीर की पवन, पवन में मिल जाती है। ज्योति, परम ज्योति में समा जाती है। यह आश्चर्यजनक खेल प्रमात्मा का विस्मादी खेल है। मिट्टी, मिट्टी में मिल जाती है। हम मोह और भ्रमजाल में फंसे हुए हैं। करतार की रचना, जन्म - मृत्यु उसका अपार, अटल हुक्म है। अपनी रज़ा में प्रभु के उत्पति व विनाश बनाया हुआ है। गुरु के उपदेश को समझ कर जन्म - मृत्यु का यह भ्रम, दुविधा दूर हो जाती है। गुरु नानक जी ने जगत रचना की तुलना गवाले और गायों के ढोर से की है : -

गोइल आइआ गोइली किआ तिसु डंफु पसार ।।

मुहलति पुनी चलणा तू संमलु घर बारु ।।

हरि गुण गाउ मना सतिगुरु सेवि पिआरि ।।

किआ थोड़ड़ी बात गुमानु ।। रहाउ ।।

जैसे रैणि पराहुणे उठि चलसहि परभात ।।

किआ तू रता गिरसत सिउ सभ फुला बागात ।। 2 ।।

मेरी मेरी किआ करहि जिनि दीआ सो प्रभु लोड़ि ।।

सरपर उठी चलणा छडि जासी लख करोड़ि ।।

लख चउरासीह भ्रमतिआ दुलभ जनमु पाइओइ ॥

नानक नामु समालि तूं सो दिनु नेड़ा आइओइ ॥ (अंग - 50)

गवाले ढोर को चरागाह में लेकर जाते हैं, जब वहां चारा समाप्त हो जाता है, तो वहां से चले जाते हैं। चारे की तरह स्वासों की पूंजी समाप्त होने पर मनुष्य को चले जाना है। रात के आतिथी की तरह, भोर होते ही उठ कर चले जाना है। ऐ बन्दे, मेरी मेरी की रट मत लगा। यह तो फूलों की बगिया की भांति है। जरा समझो, चौरासी लाख योनियों में भटकने के उपरांत, प्रभु की कृपा से यह मनुष्य जन्म प्राप्त हुआ है। इस का सदोपयोग करो, जाने का समय समीप आया हुआ है।

मोह माया : ऐ बंधु, तू क्यों विषय - विकारों में फंसा हुआ है। यह संसार चिरस्थाई नही है। एक प्राणी जन्म लेता है, दूसरा प्रस्थान कर रहा है। यह धन सम्पदा किसी की नही, तुम जिनसे प्रीत लगाए बैठे हो। यह तो बादल की छाया की भांति है, जो स्थिर नही रहती। एक उदाहरण, गुरु साहिब जी धुएं का लेते हैं, यह संसार तो धुएं का पर्वत है। इस लिए, भैया, आप संसार की वास्तिवकता को जानों। अपने मूल और मालिक, प्रभु को मत भुलाओ। उसे याद रखो, उसका सिमरन, सम्पर्ण करो। संसार से जाने के उपरान्त केवल प्रभु नाम का धन ही तेरे साथ जाएगा: -

बसंतु महला ९ ॥

मन कहा बिसारिओ राम नामु ॥

तनु बिनसै जम सिउ परै कामु ॥ रहाउ ॥

इहु जगु धूए का पहार ॥

तै साचा मानिआ किह बिचारि ॥

धनु दारा संपति ग्रेह ॥

कछु संगि न चालै समझ लेह ॥

इक भगति नाराइन होइ संगि ॥

कहु नानक भजु तिह एक रंगि ॥ (अंग - 1186 - 87)

संसार बिनसनहार, विनाशमय : धुएं का पर्वत निरार्थ है। क्षणमात्र में बिखर जाता है। गुरु अर्जुन देव जी यहां तक फरमाते हैं कि धरती और आकाश भी चिरस्थाई नही हैं : -

पउड़ी ॥

धरति आकासु पातालु है चंदु सूरु बिनासी ॥

बादिसाह साह उमराव खान ढाहि डेरे जासी ॥

रंग तुंग गरीब मसत सभु लोकु सिधासी ॥

काजी सेख मसाइक सभे उठि जासी ॥

पीर पैकाबर अउलीए को थिरु न रहासी ॥

रोजा बाग निवाज कतेब विणु बुझे सभ जासी ॥

निहचलु सचु खुदाइ एकु खुदाइ बंदा अबिनासी ॥ (अंग - 1100)

धरती और आकाश के साथ साथ चांद सूर्य भी अविनाशी नहीं हैं। राजा महाराजा, बादशाह सब का विनाश हो जाता है। धनवान न निर्धन, सभी एक दिन परलोक सिधार जाते हैं। काज़ी पीर-पैगम्बर आदि कोई भी सदैव यहां नही रहता। धार्मिक संस्कार, रीति रिवाज भी मिट जाते हैं। इस पृथ्वी पर चौरासी लाख योनि आवगमन में हैं। स्थिर अविनाशी तो केवल प्रमात्मा, वाहिगुरु का नाम है।

मिट्टी के पुतले : इस फलसफे को संत कबीर जी स्पष्ट करते हैं: -

कबीर माटी के हम पूतरे मानसु राखिओ नाउ ।।

चारि दिवस के पाहुने बड बड रूंधहि ठाउ ।। (अंग-1367)

कबीर जी बताते हैं कि मानुख नाम का यह माटी का पुतला इस संसार में चार दिन का महमान है, परन्तु विशाल सम्पत्ति बनाने में जुटा है। फरीद साहिब इस मत से सहमती प्रकट करते हैं: -

कंधी उतै रुखड़ा किचरकु बंनै धीर ।।

फरीदा कचै भांडे रखीऐ किचर तांई नीर ।। (अंग-1382)

नदी किनारे खड़ा वृक्ष कब तक अपनी खैर मनाएगा है। निसंदेह, अधिक नहीं। नदी में बाढ़ आयेगी, और उसे बहा ले जाएगी। इसी प्रकार मिट्टी के कच्चे घड़े में पानी टिकता नही है। शीघ्र ही बरतन टूट जाएगा और पानी बिखर जाएगा। भक्त रविदास जी इस सम्बंध में वचन उच्चारण करते है : -

जल की भीति पवन का खंबा रकत बूंद का गारा ।।

हाड मास नाड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ।।

प्राणी किआ मेरा किआ तेरा ।।

जैसे तरवर पंखि बसेरा ।। (अंग-659)

भक्त जी समझाते हैं कि मनुष्य के शरीर की बनावट कैसी है। इस भवन की दीवारें पानी की हैं, शरीर स्तम्भ की भांति, वायु पर निर्भर है। लहू और बिन्द, मानो मिट्टी की गार है, (सीमेंट) भाव माता के रक्त व पिता के वीर्य से बना है। बाकी शरीर हड्यिों मांस और नाड़ियों का ढांचा, पिंजरा मात्र है। जिस में पंछी भाव जीवात्मा का निवास है। ऐ, प्राणी, यह आत्मा इस शरीर में स्थिर नहीं रहती। पंछी एक दिन पिंजरा छोड़ कर उड़ जाता है, जैसे पक्षी रात को पेड़ पर विश्राम करने के उपरांत भोर होते ही पेड़ छोड़ कर उड़ जाते हैं। ऐसा ही शरीर में बसने वाले पक्षी, आत्मा का व्यवहार है।

पूर्व जन्म के संयोग व कर्म :- गुरबाणी अनुसार, प्राणी के पूर्व जन्म के कर्मो का प्रभाव मनुष्य के वर्तमान जीवन पर पड़ता है। गुरु अर्जुन देव जी फरमाते हैं: -

कोई जानै कवनु ईहा जगि मीत ।।

जिसु होइ कृपालु सोई बिधि बूझै

ता की निरमल रीत ।। रहाउ ।।

माता पिता बनिता सुत बंधप इसट मीत और भाई ।।

पूरब जनम के मिले संजोगी अंतहि को न सहाई ।। (अंग-700)

गुरू जी कहते हैं, इस जग में कोई किसी का मित्र नहीं हो सकता, क्योंकि कोई भी स्थिर नहीं है। इसी रीति व रहस्य को वही जान सकता है, जिस पर प्रभु की कृपा हो। हमें माता - पिता, पत्नी, पुत्र, मित्र आदि हमें हमारे पूर्व जन्म के संयोग से मिलते हैं। परन्तु अंत समय वो भी साथ नहीं दे सकते।

सुखमनी साहिब की अष्टपदी 15 की पौड़ी 3 में भी गुरु अर्जुन देव जी का फरममान है : -

मन मूरख काहे बिललाईऐ ।।

पूरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ।।

दूख सूख प्रभ देवनहारु ।।

अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ।।

जो कछु कहै सोई सुख मानु ।।

भूला फिरै काहे अजान ।।

कउन बसतु आई तेरै संग ।।

लपटि रहिओ रसि लोभी पतंग ।।

राम नाम जपि हिरदे माहि ।।

नानक पति सोती घरि जाहि ।। (अंग - 287)

हे मेरे मूढ़ मन, तुझे पश्चाताप की आवश्यकता नही है। अपने पूर्व जन्मो के फलस्वरूप दुख और सुख का अहसास कर रहे हो, जो कि प्रभु के नियंत्रण में है। किसी दूसरे से सुख की आशा छोड़ केवल उस एक प्रभु को याद कर। 'प्रभु नाम' के अतिरिक्त ना तो कोई वस्तु तेरे साथ आई है और ना जाएगी, हे! लोभी पतंगे जैसे व्यवहार कर रहे हो। यदि तुम प्रभु सिमरन करोगे, तो परलोक में प्रभु के द्वार पर सम्मान, प्रतिष्ठा पाओगे। बारबार के जन्म मृत्यु से छुटकारा मिलेगा ।

जीवन मरना सभु तुधै ताई ।।

जिस बखसे तिसु दे वडिआई ।।

नानक नाम धिआइ सदा तूं जंमणु मरणु सवारणिआ ।। (अंग - 110)

प्रभु नाम सिमरन के आधार पर यदि तुम्हें प्रमात्मा बख्शिश कर दें तो तुम्हारा इस संसार में आना जाना छुट जाएगा। दुखों से छुटकारा पा लोगे। परन्तु यह जीना मरना सदगुरु की शरण लिए बिना नहीं छूट सकता। सदगुरु की शरण में, प्रभु इच्छा से पूर्व जन्म के बुरे कर्मो का लेखा चुकता हो जाता है। गुरु अमरदास जी फरमाते हैं: -

पूरब लिखिआ सु मेटणा न जाए ।।

नानक बिन सतिगुर सेवे मोखु न पाए ।। (अंग - 88)

इसी प्रकार यदि हुक्म स्वेच्छा स्वीकार कर लिया जाए तो माथे के अमिट लेख भी मिट सकते हैं।

मसतकि लिलाटि लिखिआ धुरि ठाकुरि मेटणा न जाइ ।।

नानक से जन पूरन होइ जिन हरि भाणा भाइ ।। (अंग - 1276)

आत्मा अमर : सद्‌गुरु के मिलाप से पूर्व जन्म के दुष्कर्मो का संताप मिट जाता है, रामकली राग में गुरु अर्जुन देव जी कमाल की बात करते हैं। आप कहते हैं, बन्धु, कोई मरता नही है। ब्रह्मज्ञानियों से मिल कर इस पर विचार करें।

पवनै महि पवनु समाइआ ।। जोति महि जोति रलि जाइआ ।।

माटी माटी होई एक ।। रोवनहारे की कवन टेक ।। 1 ।।

कऊन मुआ रे कऊन मुआ ।। ब्रह्मज्ञानी मिल करहु विचारा ।।

एहु तउ चलतु भइआ ।। 1 ।। रहाउ ।।

अगली कछु खबरि न पाई ।। रोवनहारु भी ऊठ सिधाई ।। 2 ।।

भरम मोह के बांधे बंध ।। सुपनु भइआ भखलाए अंध ।।

इहु तउ रचनु रचिआ करतारु ।। आवत जावत हुकम अपारि ।।

नह को मूआ न मरणै जोगु ।। नह बिनसै अबिनासी होगु ।। 3 ।।

जो इहु जाणहु सो इहु नाहि ।। जानणहारे कउ बलि जाउ ।।

कहु नानक गुरि भरमु चुकाइआ ।।

ना कोई मरै न आवै जाइआ ।। 4 ।। (अंग - 885)

प्रथम चरण में, प्रमात्मा की इच्छानुसार, जब जीव मां के उदर में प्रवेश करता है, गुरमति सिद्धान्तानुसार जीव उस समय प्रभु ध्यान में होता है।

श्री गुरु नानक साहिब के गुरु वाक्य है : -

पहलै पहरै रैणि कै वणजारिए मित्रा हुकम पइआ गरभासि ।।

उरध तपु अंतरि करे वणजारिए मित्रा

खसम सेती अरदासि ।।

खसम सेती अरदासि वखाणै उरध धिआनि लिव लागा ।।

ना मरजादु आइआ कलि भीतरि बाहुड़ि जासी नागा ।।

जैसी कलम बुड़ी है मसतकि तैसी जीअड़े पास ।।

कहु नानक प्राणी पहलै पहरै हुकम पइआ गरीभासि ।। (अंग - 74 - 75)

गुरु महाराज जीव को एक व्यापारी सम्बोधित करते हुए कहते हैं, ऐ सौदागर, मनुष्य, तू इस संसार में 'नाम' का सौदागर बन कर आया है। सर्वप्रथम प्रभु के हुक्म से तेरा मात गर्भ में निवास हुआ, उल्टा लटका रहा और प्रभु सिमरन करता रहा। नोट करने वाली बात है कि इस अवस्था में भी जीव पूर्णतया सावधान होता है। उसे अपनी अवस्था का पूर्ण ज्ञान होता है। साथ साथ प्रभु से प्रार्थना भी करता है कि मुझे इस 'कुम्भी नर्क' में से बाहर निकालो। जब जीव इस संसार में प्रवेश करता है, तो उसकी कोई मर्यादा नही होती। निर्वस्त्र आता है और वैसे ही चला जाता है। तेरे लिए प्रमात्मा ने जिस प्रकार की कलम चलाई है, जैसा तेरा भाग्य लिखा है, तू वैसा ही जीवन में व्यवहार करता है। फिर अपनी आयु भोगने के उपरांत, अंत में मौत का फरिश्ता ले जाने के लिए

आता है। मौत का समय, रज़ा, हुक्म होता है, किसी को इस की जानकारी नही होती। आस पास झूठा रोना धोना होने लगता है। देखते ही देखते जीव अपने सगे सम्बंधियों को छोड़ कर पराया हो जाता है।

चउथै पहरे रात कै वणजारिआ मित्रा

बिरधि भइआ तनु खीणु ।।

अखी अंध न दीसई वणजारिआ मित्रा कंनी सुणै न वैण ।।

अखी अंधु जीभ रसु नाही रहे पराकउ ताणा ।।

गुण अंतरि नाही किउ सुख पावै मनमुख आवण जाणा ।। (अंग - 76)

मनुष्य का शरीर, तन, बृद्धावस्था में क्षीण, खोखला यानि कमजोर हो जाता है। आंखों की ज्योति मध्यम हो जाती है। कानों से कुछ सुनाई नहीं देता। जिब्हा रसहीन हो जाती है। तना हुआ शरीर झुक जाता है और संसार छोड़ कर चला जाता है। यदि प्रमात्मा के नाम का सिमरन नही किया, मनमुख प्राणी आलसी बना रहा तो वह फिर से जन्म और मृत्यु के चक्र में पड़ेगा।

भाणा, रज़ा : 'भाणा' 'हुक्म' 'मरजी' 'रज़ा' क्या है। सारे विचार का निष्कर्श, मारू राग में गुरु अमर दास जी के फरमाते हैं: -

जो तुधु करणा सो करि पाइआ ।।

भाणे विच को विरला आइआ ।।

भाणा मंने सो सुख पाए भाणे विच सुखु पाइदा ।। 1 ।।

गुरमुखि तेरा भाणा भावै ।।

सहजे ही सुखु सचु कमावै ।।

भाणे नो लोचै बहुतेरी आपणा भाणा आपि मनाइदा ।। 2 ।।

तेरा भाणा मंने सु मिलै तुध आए ।।

जिस भाणा भावै सो तुझहि समाए ।।

भाणे विचि वडी वडिआई भाणा किसहि कराइदा ।। 3 ।।

जा तिसु भावै ता गुरू मिलाए ।।

तुधु आपणै भाणै सभ सृष्टि उपाई

जिस नो भाणा देहि तिसु भाइदा ।।

मनमुखु अंधु करे चतुराई ।। भाणा न मैंने बहुतु दुखु पाइ ।।

भरमे भूला आवै जाए घरु महलु न कबहु पाइदा ।। (अंग - 1063)

भाई गुरदास जी गुरमुख के गुणों को इस प्रकार बताते हैं : -

गुरमुख हउमै परहरै मन भावै खसमै भाणा ।

पैरी पै पारवाक होइ दरगह पावै माण निमाणा ।

वरतमान विच वरतदा होवणहार सोई परवाणा ।

कारण करता जो करै सिर धर मन करै शुकराना ।

राजी होइ रजाइ विच दुनिआं अंदर जिऊं मिहमाणा ।

सिमादी विसमाद विच कुदरत कादर नों शुकराणा ।

लेप अलेप सदा निरबाणा । (भाई गुरदास जी, वार - 18)

भावार्थ, कि जो गुरमुख, प्रभु को समर्पित है वह अहंकार को त्याग देता है। मैं और मेरी से ऊपर उठ जाता है और खसम, मालिक के हुक्म, भाणे में रहता है। अन्य गुरमुख, प्रभु को समर्पित जनों का आदर करता है, लोक और परलोक में प्रतिष्ठा पाता है। वह वर्तमान में रहता है और जो घट रहा है उसे भाग्य का लेख मानता है। संसार में ऐसे रहता है जैसे कि आतिथी, प्रभु की इच्छा में प्रसन्न रहता है। उसकी रज़ा में राजी रहता है, दुर्घटना को भी प्रभु का वरदान मान कर स्वेच्छा स्वीकार करता है, वाहिगुरु का आभार, धन्यवाद ही करता है। प्रमात्मा की आश्चर्यजनक प्रकृति को देख कर सदैव बलिहार जाता है। इस प्रकार के संसारिक बंधनों से मुक्त, र्निलेप एवं अलिप्त रहता है। दुख में भी सुख का अहसास कर प्रसन्न रहता है।

दुख दारू सुख रोग भइआ जा सुख ताम न होई ।।

तू करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ।।

बलिहारी कुदरति वसिआ ।।

तेरा अंत न जाई लखिआ ।।1।।

जाति महि जोति महि जाता अकल कला भरपूर रहिआ ।।

तूं सचा साहिबु सिफति सुआलिउ

जिनि कीती सो पारि पइआ ।।

कहु नानक करते किआ बाता

जो किछु करणा सो करि रहिआ ।। 2 ।। (अंग - 469)

सुख में प्रमात्मा की याद कम आती है। इसलिए दुख, दारू बन जाता है कि प्रमात्मा अच्छी तरह याद आने लगता है। करता पुरख, प्रभु को जीव भली प्रकार समझता है और कहता है कि तू ही करणहार, कर्ता है। मैं कुछ भी नही। प्रमात्मा तू प्रकृति में बसा है, सर्वव्यापक है तुझ पर बलिहार बलिहार जाते हैं। तेरी अपनी ही कुदरत, प्रकृति है और स्वयं ही उस में बसा है। गुरमुख, आस्थावान जीव इस बात पर टिकता, विश्वास रखता है कि उस प्रभु का यशगायन अथवा साधु संगत करें। जो उसकी इच्छा है, वह कर रहा है हम उसकी इच्छा को स्वीकार करें। कबीर जी बिलावल राग में वचन करते हैं: -

ऐसो इहु संसारु पेखना रहनु न कोउ पई है रे ।।

सूधे सूधे रेगि चलहु

तुम नतर कुधका दिवई है रे ।।1।। रहाउ ।।

बारे बूढे तरूने भईआ सभहु जमु लै जई है रे ।।

मानसु बपुरा मूसा कीनो मीचु बिलईआ खई है रे ।।

धनवंता अरु निरधन मनई ता की कछु न कानी रे ।। 2 ।।

राजा परजा सम करि मारै ऐसो काल बडानी रे ।।

हरि के सेवक जो हरि भाए तिन की कथा निरारी रे ।।

आवहि न जाहि न कबहु मरते पारब्रह्म संगारी रे ।।

पुत्र कलत्र लछिमी माइआ इहो तजहु जीअ जारी रे ।।

कहत कबीर सुनहु रे संतहु मिलि है सारिगपानी रे ।। (अंग - 955)

यह संसार ऐसा तमाशा है यहां कोई सदा के लिए नही रह सकता। इस लिए जीवन के सीधे रास्ते पर चलो भई, नही तो कुकर्मो के कारण मुंह की खाओगे। व्योबृद्ध हो, बालक या नवयुवक सभी को यम ले जाएंगे। मनुष्य रूपी चूहे को, मौत रूपी बिल्ली खा जाती है। यह ना तो धनवान देखती है और ना ही निर्धन। राजा, प्रजा, किसी पर भी इसे दया नही, इसे दया है तो वह है प्रभु के, वाहिगुरु के भक्तों पर, पारब्रह्म के संगी साथी आवागमन के चक्र में नही पड़ते, आओ, प्रभु से मिलाप करें। सदगुरु तेग बहादुर जी समझाते हैं कि मरने की चिंता तो तब करें यदि यह अनहोनी हो, अनहोनी कभी होती ही नही है, इसे होना ही होता है। आप अपने श्लोक 51 में फरमाते हैं: -

चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ।।

इहु मारगु संसार को नानक थिर नही कोइ ।। (अंग - 11429)

अगले शलोक में फरमाते हैं कि जो इस संसार में पैदा होता है, उसका विनाश आवश्यक है। सभी जंजाल, संसारिक चिंताएं छोड़ कर प्रभु का गुण गायन करना चाहिए। गृहस्थी के कर्त्तव्य निभाते हुए भी प्रमात्मा से जुड़े रहें। निर्लेप, अलिप्त रहें और जीवन के प्रति कर्त्तव्य भी निभाते रहें : -

जो उपजिओ से बिनसि है परो आजु कै कालि ।।

नानक हरि गुन गाइ लै छाडि सगल जंजाल ।। (अंग - 1429)

गुरू अर्जुन देव जी के वचन है कि जो जन्म लेता हे मरता भी आवश्य है परन्तु यह प्रमात्मा, वाहिगुरु के वश में है किसी को कम उम्र में ले जाए या दीर्घायु दे। गुरु वाक्य है : -

जैसे किरसान बोवै किरसानी ।।

काची पाकी बाढ परानी ।। 1 ।।

जो जनमै सो जानहु मुआ ।।

गोविंद भगतु असथिर है थीआ ।। 1 ।। (अंग - 375)

इस लिए प्रमात्मा की भक्ति करनी चाहिए। इससे आत्मज्ञान मिलेगा और हम स्थिर रहने के सामर्थय होंगे। हमारा जीवन किसान की खेती जैसा है। किसान, प्रमात्मा अपनी कृषी को पकने से पहले काट ले या पकने के उपरान्त, भाव बच्चे, जवान या बूढ़े को महत्व नही, यह उसकी इच्छानुसार है। संसार में जीना तो ऐसे है जैसे किसी घर में आतिथि आते हैं और एक या दो रातें बिता कर चले जाते है।

जैसे रैणि पराहुणे उठि चलसहि परभाति ।।

किआ तूं रता गिरसत सिउ सभ फुला की बागात । (अंक - 50)

महामानों के जाने पर हम कोई शिकवा नही करते, कोई रोना धोना नही होता। उनका बिछड़ना हम खुशी सहन करते हैं। इसी प्रकार जीवन की सांझ ढलने पर, अवधि समाप्त होते ही मनुष्य भी चला जाएगा। इस लिए अपने वास्तविक निवास, परलोक में जाने के लिए, हे प्राणी, प्रभु नाम की समग्री को सम्भालो, प्रमात्मा की भजन बंदगी करो।

मातापिता, भाईबन्धु, पुत्रपुत्रीयां, पत्नी और दूसरे सम्बंधी, कौन हमारे साथ जा सकता है, कोई नही। दिन और पहर गुजरते जा रहे हैं, पल और घड़ियां भी रुकती नहीं। समय बीतते - बीतते काल, मृत्यु का दिन समीप आ जाता है। कबीर साहिब का फरमान है: -

दिन ते पहर पहर ते घरीआं आव घटै तनु छीजै ॥

काल अहेरी फिरै बधिक जिउ कहहु कवन बिधि कीजै ॥ 1॥

सो दिन आवन लागा ॥

मात पिता भाई सुत बनिता कहहु कोऊ है का का ॥ 1 ॥ (अंक - 752)

कबीर जी फरमाते हैं, हे बंधु जीवन जीने के लिए लोभ अथवा लालच मत करो। मन के भ्रम और दुविधा दूर करो। केवल एक प्रभु की शरण में आ कर उसका नाम सिमरन करो, जो हमारे जीवन का आदर्श है। यह जन्ममृत्यु का जो दुख है, प्राणी जन्म से ही साथ लाता है, "**मरण लिखाइ मंडल महि आए ॥**" मृत्यु जन्म के बाद नही लिखी जाती, बल्कि यह मस्तक के लेख तो संसार में प्रवेश के समय साथ आते हैं। प्राणी इसे स्वीकार करे और हरी, प्रमात्मा के गुण गायन से यह औखी घाटी, विकट समय गुजर जाता है : -

जनमत ही दुखु लागै मरणा आइ कै ॥

जन्मु मरणु परवाण हरि गुण गाइ कै ॥ (अंक - 752)

खेल तमाशा: निष्कर्ष यह कि सब कुछ एक वाहिगुरू की इच्छानुसार चलता है। संसार स्थिर नही है। सृजनहार प्रभु स्वयं संसार की सृजना करता है और स्वयं ही इसका विनाश करता है। कमाल की बात है, वह स्वयं संसार के कण कण में समाया हुआ है। वह बेअंत, अपर अपार है। उसका अंत नही पाया जा सकता। जिस प्राणी ने एक मन, एक चित हो कर प्रभु का सिमरन किया उसीने जन्म - मृत्यु पर विजय पाई है, मनुष्य जीवन उसी का सफल है। गुरु जी का फरमान है : -

जो तिस भावै संम्रथ सो थीऐ हीलड़ा एहु संसारो ॥

जलि थलि महिअल रवि रहिआ साचड़ा सिरजनहारो ॥

साचा सिरजनहारो अलख अपारो ता का अंतु न पाइआ ॥

आइआ तिन का सफलु भइआ है इक मनि जिनी धिआइआ ॥

ढाहे ढाहि उसारे आपे हुकमि सवारणहारो ॥

जो तिसु भावै संम्रथ सो थीऐ हीलड़ा इह संसारो ॥ (अंग - 579)

आवागमन से छुटकारा : अब देखना यह है कि जन्म मृत्यु का जो दुख, जो हमें जन्म से ही मिलता है, उससे छुटकारा कैसे पाया जाए। गुरू अर्जन देव जी राग बिलावल में फरमाते हैं : -

इहु सागरु सोई तरै जो हरि गुण गाए ॥

साध संगति के संगि वसै वडभागी पाए ॥

सुणि सुणि जीवै दासु तुंम बाणी जन आखी ॥

प्रगट भई सभ लोअ महि सेवक की राखी ॥ 1 ॥ रहाउ ॥

अगनि सागर ते काढिआ प्रभि जलनि बुझाई ॥

अमृत नामु जलु संचिआ गुर भए सहाई ॥ 2 ॥

जन्म मरण दुख काटिआ सुख का थानु पाइआ ॥

काटी सिलका भ्रम मोह की अपने प्रभ भाइआ ॥ (अंक - 813)

जन्म मृत्यु का दुख प्रमात्मा के गुन गायन से दूर होता है। यह कहां और कैसे गाए जाते है, इसका आसान रास्ता है ''साध संगति''। साध संगति में मिल बैठ कर प्रभु के यशगायन का अवसर सौभाग्य से मिलता है। दुख कट जाते हैं और सुखों की प्राप्ती हो जाती है। मोह माया की जंजीरे, साध संगति में टूट जाती है। अपने प्रभु को मनुष्य प्रिय लगने लगता है। गुरू अर्जुन देव जी राग भैरौ में फरमाते हैं :-

आगे दयु पाछे नाराइण ॥

मधि भागि हरि प्रेम रसाइण ॥ 1 ॥

प्रभू हमारै सासत्र सउण ॥

सूख सहज आनंद गृह भउण ॥ रहाउ ॥

रसना नामु करन सुणि जीवै ॥

प्रभु सिमत सिमर अमर थिर थीवै ॥

जनम जनम के दूख निवारे ॥

अनहद शब्द वजे दरबारे ॥

करि किरपा प्रभि लीए मिलाए ॥

नानक प्रभ सरणागति आए ॥ (अंग - 1137)

इस शब्द में सद्‌गुरु जी ने तीनों काल का वर्णन करते हैं। बताते हैं कि तीनों काल में सद्‌गुरु जी हमारे रखवाले हैं। हे बन्धु, प्रमात्मा भविष्य में जीवों पर दया करने वाला है। भूत काल में जीवों पर पालन हार था और वर्तमान में जीवों का प्यार करने वाला है, प्यार की बख्शिश करता है। प्रभु सुख स्थिरावस्था सहज और आनंद की जलधारा है। जीब्हा से नाम का जाप करके जीव अमर हो जाते हैं। जिन्होंने हरि नाम जपा और प्रमात्मा की शरण में आए, उनके जन्म-मृत्यु के दुख दूर हो गए। दुख ही नहीं, साथ साथ प्रभु-नाम की महिमा से उनके हृदय में अनहद धुन का उदय हुआ और इश्वरीर्य संगीत के साज बजने लगे।

हम सारी आयु मोती-हीरे जवाहरात, चांदी-सोने, और मन लुभावने वाली माया के मोह में गंवा देते हैं, हाय-हाय करते अपनी आयु खो देते हैं। परन्तु जीवन का सच्चा पथ संतुष्टी, और सब्र का पथ है। हाथी, रथ, हवा जैसे तेज दौड़ने वाले घोड़े, आजकल उत्तम कारें, धन-धान्य, जमीन-जायदाद, आलीशान निवास स्थान ही बनाते रहते हैं। परन्तु अंतत : इस संसार से खाली हाथ ही जाना है :-

मुकति माल कनिक लाल हीरा मन रंजन की माइआ ॥

हा हा करत बिहानी अवधहि ता महि संतोखु न पाइआ ॥ 2 ॥

हसत रथ अश्व पवन तेज धणी भूमन चतुरांगा ।।

संगि न चालिओ इन महि कछुऐ ऊठि सिधाइओ नागा ।। 3 ।।

जीवन सफला : (मनुष्य जन्म का मनोरथ प्राप्त करना) संसार की वास्तविकता कथन करते हुए हमें समझाते हुए गुरु अर्जुन देव जी और उपदेश करते हैं : -

हरि के संत प्रिअ प्रीतम प्रभ के ता कै हरि हरि गाइऐ ।।

नानक ईहा सुखु आगै मुख ऊजल संगि संतन कै पाइऐ ।।

सो, वाहिगुरु जी के प्रिय - जनों, आओ संतों व साध संगति, और गुरमुख प्यारों से मिल कर, जिस प्रभु ने हमें पैदा किया है उसके गुन गायन करें। जिससे यहां तो सुख की प्राप्ती होगी ही, आगे जाकर मुख उजला अथवा गर्व से सिर ऊँचा होगा। श्री गुरु रामदास जी का फरमान : -

आइआ मरणु धुराहु हउमै रोइऐ ।।

गुरमुख नाम धिआइ असथिरु होइऐ ।। 1 ।।

गुर पूरे साबासि चलणु जाणिआ ।।

लाहा नामु सु सारु सबदि समाणिआ ।। 1 ।। (अंग - 369)

मनुष्य के भाग्य लिखते समय प्रभु ने मृत्यु निश्चय लिखी है। मृत्यु के समय हम द्वैत भावना में, आज्ञानता में, अहंवश हो कर रोते हैं। गुरु का उपदेश सुन कर प्रभु नाम की ध्यान साधना करने से स्थिर हो जाते हैं, संपूर्ण गुरु ने हमें जन्म और मृत्यु का रहस्य समझा दिया है। प्रभु नाम का धन इकत्रित करके ही जीवन का वास्तविक आनंद उठाया जा सकता है। इस तरह शब्द की साधना, कमाई हो जाती है, वाहिगुरु से मिलाप हो जाता है। गुरु 'गुरु ग्रंथ साहिब' को पूर्ण: समर्पित कर, परमपद की प्राप्ति हो सकती है। गुरबाणी हमारी द्वैत भावना का नाश कर देती है। गुरबाणी हमारी अज्ञानता दूर करे हमारा मन निर्मल कर देती है। हमारे अंतर में ज्ञान का प्रकाश प्रकट हो जाता है। गुरबाणी के वचनों का अनुसरण, हमारे अहंकार को दूर करने का केवल एक ही सरल रास्ता है।

जितने दिन प्रभु ने इस संसार में हमारे लिए लिखे हैं, वह पूरे हो जाते हैं। आज चले जाना है, कल चले जाना है, प्रभु के घर से बुलावा आ जाना है। जिन्होंने अपने परम पिता प्रभु को भुला रखा है, उन्होंने मानो अपना जीवन व्यर्थ गंवा दिया है। गुरू की शरण में आकर जीवन - मरण आसान और सुखमय हो जाता है। इस प्रकार सच्चे वाहिगुरू, सच्चो - सच्च में समा जाते हैं। गुरू नानक देव जी फरमाते हैं : -

पूरब लिखे डेह सि आए माइआ ।।

चलणु अजु कि कलि धुरहु फुरमाइआ ।। 2 ।।

बिरथा जनमु तिना जिन्ही नामु विसरिआ ।।

जूऐ खेलणु जगि कि इहु मनि हारिआ ।। 3 ।।

जीवणि मरनि सुख होइ जिन्हा गुर पाइआ ।।

नानक सचे सचि सचि समाइआ ।। 4 ।। (अंग - 369)

गुरमति अनुसार इस ब्राह्मण्ड में चौरासी लाख योनियों की उत्पति बताई गई है। इन सब में से उत्तम जन्म मनुष्य जन्म माना गया है। दूसरी सभी योनियां भोगने के उपरांत, सौभाग्य से यह शरीर प्राप्त होता है। जन्म - मृत्यु के दुखों के निवारण हेतु यह शुभ अवसर है। यदि इस अवसर को खो देंगे तो फिर से जन्म - मरण के भवसागर में फंस जाएगे। गुरु वाक्य हैं : -

लख चउरासीह जोनि सबाई ।। मानस कउ प्रभि दीइ वडिआइ ।।

जिस पउड़ी ते जो नरु चूकै सो आइ जाइ दुख पाइदा ।। 2 ।। (अंग - 1075)

मनुष्य जन्म सभी योनियों में उत्तम योनि है। प्रमात्मा ने मनुष्य को बढ़पन दिया है। इसे मन - चित्त - बुद्धि बख्शिश की है। जिस का सदुपयोग करके मनुष्य जीवन का लाभ उठा सकता है। सो, गुरू की शिक्षा को अपनाएं और जीवन सफल बनायें अथवा मनुष्य जन्म का वास्तविक मनोरथ प्राप्त करें।

जिनी नाम धिआइआ गए मसकति घालि ।।

नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ।। (जपुजी साहिब)

- - - - - - - - - - - - - - - -

जसबीर सिंघ

Ph. : (0172-2696891), 09988160484

Type Setting :

Radheshyam Choudhary

Mob. : 098149- 66882